द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

लोक साहित्य -

प्रस्तावना - जीवन के मर्म को अत्यंत निकटता से गंभीरतापूर्वक समझकर, सहजतापूर्वक उसका उद्घाटन करना लोकसाहित्य का कर्म है। लोकसाहित्य किसी भी देश की मूल संस्कृति और साहित्यिक साधना की रीढ़ है। जीवन के दुःख-सुख, हँसी-खुशी, क्रिया-कलाप एवं जीवन की सच्चाई ही इसके सृजन की सबसे बड़ी ताकत है। किसी भी देश या जाति की हजारों वर्षों की परंपरा, राष्ट्र के दीर्घ जीवन के उतार-चढ़ाव और सबसे ऊपर उसकी मूल भावधारा और अंतरात्मा की झाँकी लोकसाहित्य में मिलती है। इसीलिए लोकसाहित्य को लोक की संपूर्ण ज्ञान साधना और सृजन क्षमता का महासागर कहा जाता है।

लोक की अक्षर रहित मौखिक अभिव्यक्ति लोकवार्ता है और लोकवार्ता को जब लिपिबद्ध करने का निश्चय किया जाता है, वह ’लोकसाहित्य‘ बन जाता है। डाॅ० नंदलाल कल्ला के अनुसार, ’’लोकवार्ता की अनमोल संपदा को काल की अकरुण व क्रूर दृष्टि से बचाने वाली भाव सृष्टि का नाम लोकसाहित्य है।‘‘

लोकसाहित्य का परिचय -

 लोकसाहित्य मानव हृदय के यथार्थ चित्र का दर्पण है। जीवन की सच्चाई इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। यह लोक आधारित ज्ञान से गतिमान होता है, नए-नए अनुभवों को एकत्रित कर संपन्न होता है। यह अतीत का अवशेष है तो वर्तमान का जीवित अभिलेख भी। शास्त्रीय तर्क-वितर्क से पूर्णतः मुक्त लोकसाहित्य में मानवीय संबंधों का रूपांकन बड़ी सहजता से होता है। इस साहित्य में कोई विचारधारा काम नहीं करती।

 लोकसाहित्य समूह की रचनाशीलता का परिणाम है। सामूहिकता की भावना लोकसाहित्य का सबसे बड़ा गुण है। यद्यपि लोकसाहित्य व्यक्तियों द्वारा रचा जाता है तथापि लोकसाहित्य का रचयिता संपूर्ण क्षेत्र, समाज, वर्ग का प्रतिनिधि मात्र होता है। उसका सर्जक एक व्यक्ति होकर भी पूरा लोक होता है।

 लोकसाहित्य का वण्र्य विषय और शैली क्षेत्रीय और जातिगत आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं। पर्व, त्यौहार, उत्सव, सांस्कृतिक परंपराओं की विशिष्टताएँ, अलग-अलग देशकाल और परिस्थिति में लोकजीवन की विविधता में परिव्याप्त रहती है और इस विविधता में भी अभिन्न सृजनशीलता का सूत्र सदैव विद्यमान रहा है।

 लोकसाहित्य लोकमानस की सार्वभौमिक, वाणीगत अभिव्यक्ति है। लोकमानस किसी न किसी रूप में शिष्ट, अभिजात्य और प्रबुद्ध वर्ग में अवश्य विद्यमान रहता है। यह लोकमानस वस्तुतः मूल सृष्टिकालीन मनुष्य से लेकर अब तक के मानव में विद्यमान सहज प्रतिक्रियाओं का परिणाम है। इसी लोकमानस की आधारशिला पर ही लोकसाहित्य का निर्माण होता है। लोकसाहित्य लोकमानस की स्वतः उत्पन्न अभिव्यक्ति है।

 लोकसाहित्य के अन्तर्गत लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ आदि आते हैं। ये सब सर्व साधारण की सोच, अनुभूति, मन-बहलाव के अनन्य साधन और हृदय के समस्त उद्गार हैं। इनसे ही लोकसाहित्य समृद्ध होता है।

 लोकसाहित्य की विशेषताएँ -

 लोकसाहित्य का अर्थ, उसकी प्रकृति, स्वरूप, शिष्ट साहित्य से उसके संबंध आदि से लोकसाहित्य की विशेषताएँ निर्धारित की जाती हैं -

1. लोक साहित्य के अभिव्यक्ति का साधन बोली होती है, भाषा नहीें।

2. वह जनता के कंठ में मौखिक अथवा लिखित होता है।

3. लोक साहित्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संक्रमित होता जाता है। इसलिए पारंपरिकता लोक साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है।

4. लोकसाहित्य आदिम संस्कृति का अवशेष रूप होते हुए भी जीवन के संदर्भ में महत्वपूर्ण होता है। यह अवशेष जीवित रहते हैं यह उनकी विशेषता कही जाती है।

5. लोकसाहित्य व्यक्ति द्वारा निर्मित होते हुए भी व्यक्तिगत नहीं बल्कि समष्टिगत होता है। वह समूह जाति, क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

6. लोक साहित्य में लोकसंस्कृति का पूरा लेखा-जोखा होने के कारण वह लोकसंस्कृति के अध्ययन की भारी सामग्री है। अलिखित संस्कृति में लोकसाहित्य ही महत्वपूर्ण होता है।

7. लोकसाहित्य लोकमानस की अभिव्यक्ति है।

8. शिष्ट साहित्य एवं कला का मुख्य स्रोत लोक साहित्य है।

9. लोकसाहित्य में परंपराओं का निर्वाह होते हुए भी परिवर्तनशीलता होती है। लोकसाहित्य के माध्यम से परंपराएँ सुरक्षित एवं पुनरुज्जिवित होती है। वह पारंपरिक अनुभवजन्य ज्ञान का भंडार है।

10. उसमें लोकतत्व की प्रधानता होती है।

11. लोकसाहित्य की निर्मिति लोक समूह के भ्रम अथवा आभास सृष्टि से होती है।

12. उसका संपादन, विकसन एवं संक्रमण स्वाभाविक रूप से पीढी दर पीढ़ी चलता ही रहता है।

13. वह अध्ययन सामग्री एवं अध्ययन का विषय है।

14. उसमें जीवन के शाश्वत मूल्यों का संग्रह एवं परंपरागत सामूहिक संपदा होती है।